

पं मुनि॥ न स्येन स्वस्ति वाक्केन दत्तं देवता ह मि॥ अथा
व्यावीषा विषयादि दवता ह मि॥ धनं न मुद्रा पि
नगने॥ १॥ इन्द्राय॥ एन॥ ४॥ प्रादना विषी ह स्वी॥
समाधिरुत॥ अस्याहा॥ समत वि॥
न हं रुद्र न हो नाड स्य ह म नी॥
दिनी॥ इन्द्रा प्रियम मे स्वाहा॥
गप्रदी म नाय स्वाहा॥ न हं

लदनके ॥ दशधियुजा न ॥ देय न वश ॥
 धवा पञ्च नः धूनका जमा न ॥ देय न वश ॥
 मयमिव का न य न ॥ धन ॥ देय न वश ॥
 न शीयः सूर्या विं वी ॥ देय न वश ॥
 हा ॥ देय न वश ॥ देय न वश ॥

आ ॥ १ ॥ अरुकाधि

1. 335

सर्वविद्या नू काल ह ॥ मलुन दय का व ॥
 या ॥ धन खा न वा य ॥ देय न वश ॥
 जय स्यां यगि सु खा हा ॥ देय न वश ॥
 स्यां यगि सु खा हा ॥ देय न वश ॥
 सु खा हा ॥ देय न वश ॥ देय न वश ॥
 य न म ॥ देय न वश ॥ देय न वश ॥

मिच्छुखाहा॥ॐ आ४ लादिवाय वज्रपूष्यं पुनिच्छु
खाहा॥ॐ आ४ वाचस्यनयः वज्रपूष्यं पुनिच्छु
खाहा॥ॐ आ४ गवायः पूष्यं पुनिच्छुखाहा॥ॐ अ
भिश्चवायः वज्रपूष्यं पुनिच्छुखाहा॥ॐ आ४ क
सवः वज्रपूष्यं पुनिच्छुखाहा॥ॐ आ४ क
पूष्यं पुनिच्छुखाहा॥ नवदि॥ॐ कृति

ॐ आदिमियखाहा॥ॐ मगमियखाहा॥ॐ आ४
यखाहा॥ॐ पुनर्वसुखाहा॥ॐ पूष्यायखाहा
॥ॐ अश्विनयखाहा॥ॐ नवदि॥ॐ मघाका
यखाहा॥ॐ पूर्वफाल्गुणखाहा॥ॐ उग्रखाहा
॥ॐ हस्तयखाहा॥ॐ चित्रायखाहा

॥ॐ स्वास्ति यस्वाहा॥ॐ विष्ठा वाय स्वाहा॥ॐ नम
स्वि न॥ॐ नम नावाय स्वाहा॥ॐ अवाय स्वाहा॥
ॐ मनीय स्वाहा॥ॐ वृषावाय स्वाहा॥ॐ
उग्रवाय स्वाहा॥ॐ अहि विग्रय स्वा
हा॥ॐ वनय स्वाहा॥ॐ नयस्वि म॥ॐ ध
न स्वाय स्वाहा॥ॐ नतवयाय स्वाहा॥ॐ

यूर्व रुद्राय स्वाहा॥ॐ उग्र रुद्राय स्वाहा॥
ॐ तव तिय स्वाहा॥ॐ अरुनिय स्वाहा॥
ॐ रुद्रनिय स्वाहा॥ॐ नतवयाय स्वाहा॥ॐ ॐ
द्राय स्वाहा॥ॐ यूर्व॥ॐ यूर्माय स्वाहा॥ॐ अजिन
॥ॐ वरुनाय स्वाहा॥ॐ यस्वि म॥ॐ अकवनाय
स्वाहा॥ॐ अरु॥ॐ अरुनाय स्वाहा॥ॐ अरुनाय

ॐ नमो ग्याखाहा ॥ नमो ग्या ॥ ॐ वाय यखाहा ॥ वा
यय ॥ ॐ ॥ श्रीमानाय खाहा ॥ श्रीमाने ॥ धनस्य
नक्षत्रे वनय ॥ रावना ॥ निकम लमध्वलका
लेन सूर्यविमंता वनक वहुदिमुजासका
सात्रथमा तुरं विहाय ॥ ध्रुव ध्यानमनुव ॥ रिगु
सिध ॥ ज्ञान ॥ खान ॥ नेवाय ॥ धनिता ॥ मग ॥ द

धंवा दं नना ॥ सुनि ॥ धन ॥ अय ॥ नृ सं नस्य
संखस ॥ नृ ॥ गाय ॥ अय ॥ इवयल ॥ लाहीलखा ॥
अयमग ॥ ॐ नमो गवने ॥ आदित्याय ॥ का
स्ययलगाय ॥ अदिनिगरुसंरु गाय ॥ कलि
गदलगाय ॥ अत्रुनसहि गाय ॥ कर्क

चनाय, सूर्ययति शु. स्यादा ॥ मं रदयूजाया
 यरुके ॥ मधु लथि नके ॥ खान नन के ॥ कुमा
 यन ॥ सवि य ॥ मधु लवि स रू न ॥ दऊना
 पूजा ॥ शमि र्द वि य ॥ धा न रू वि स रू न ॥
 युयु, शु. य ॥ रू सिस ॥ दि निस रू ॥ धनि

आभ्यस्य

ASMA ARCHIVES

335

धूनका ॥ १ ॥ कृष्णं न सिद्धम् ॥ लंज द्वाया ॥
 कानका ॥ २ ॥ दण्डया के श्रयः त्रिनाजया ॥
 मगन वियः धउस गंः ग्वनस गं विय ॥ ३ ॥
 गिता धावन के विधि समाप्त ॥ ४ ॥

नमो ह्येवाहति ॐ प्रा० रु व्यनु क रु वा यमि सिं हान
मुञ्ज रदानये न अमूक स्य सानि य हि रु न रु त्वा

[illegible]

ॐ श्री ह सर्वविघ्न दीप दहन कर काय पर हं रुद्र स्वाहा
ॐ विघ्नान् क सर्वपाप विघ्ना मा नान् तस्मी न् कृ त् हं रुद्र
॥ **त्र का प्र का** ॥ ॐ श्री ४ विघ्नान् क सर्वे ॐ आय ॐ आयि प्र अ
ति कृ त् हं रुद्र ॥ स्नान लं ख ॥ ॐ श्री ४ विघ्नान् क सर्व पू न्ध ॐ
सं हा नान् धा के य हं रुद्र ॥ ग्रा य ॥ ॐ विन्या न् क सर्व व
जान् न पने य हं रुद्र ॥ कं च मे जा ॥ ॐ विघ्नान् क सर्व विघ्नान् पु

ॐ न्नी कृ त् स्वाहा ॥ **अ विं ग** ॥ ॐ सर्व पाप दहन व जाय व ज
सत्त्व स्य सर्व पाप दह स्वाहा ॥ सत्त्व धी र ॥ ॐ विघ्नान् क सर्व
सर्व दू ष्ट पु दू ष्टान् ॐ न्नी कृ त् स्वाहा ॥ **का प द कृ ट** ॥ ॐ ए त र
सं ए त र ॐ न्द्रिय त्व ग विघ्न धनी न्द्र च त्र हं हं रुद्र स्वाहा ॥ या
घा दि ॥ **पू ष्य न्या स** ॥ पं ची प हा त दू ष्टा ॥ **ना ष्य** ॥ चै न्द्र वा द न म्
ति र्ग र्थे न ॥ जा य ॥ व त्रि वि य ॥ धू य दि पं द यान् ॐ मि त्वा न्

न्यासाः ॥ ३ ॥ ततो अग्निकुम्भं गन्धान् अधिष्ठान ॥ इव
कमलं शशाङ्क ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति दद्यात् ॥ वृक्षदेव
तावत्तु धर्मसंघेन तांशा ॥ ४ ॥ धीना तगर्हा ॥ इति दद्यात् ॥
नैवृक्षं कूर्चं कुसुमं स्वाहा मध्यमेन्दुनकं शक्ताय नमो नमो
अग्निस्त्वाय नमो ॥ ॥ यनकं च मेनास ॥ सितं तस्यैव नमिषि
स्त्वाय नमो ॥ तावदायुः शायकं ॥ इति दद्यात् ॥ इति दद्यात् ॥ स्वस्ति वाचं
उच्यते नमो ॥ अथ नदियदिया विद्या विषयं महाशुभं

यक्यवाहनाय दानं यते अमृतं अमृतं निमित्तार्थं ॥ अमृतं
स्त्वाय नमो कर्तव्यं यो हं ॥ इति दद्यात् ॥ इति दद्यात् ॥ तावना ॥ तनुवा
त्रिगानि मध्यं कोनं पद्मसार्थं यत्तदपेति तं तागनि मनु
नरकाग्री रुद्रापातवर्षं मे कसूर्यं च नुर्जुनां वा मे दत्तु क म
मुत्र धर्मं सद्य वनदा कमाग्रा धपा ॥ ता स्वना हननी यही प
विनिर्नृति नृति दस कट धमिनी ॥ वन सत्या ले कुनमी त्रिनी
समयाग्नि विहा वेश ॥ ३ ॥ इति दद्यात् ॥ इति दद्यात् ॥ देव विद्विज सगम

गृह्यारुणिमहागन्धिसन्निहिनी एवम्वहा डं आष्टर्किज ४ हं २८
किं नाज ४ हो ४ ॥ वजा कज दि निङ्गा जेत ॥ हताग्नि ॥ वामकज
कीय ॥ ॥ डं अग्नीदीयदिवा विषा विषा महान्नय हव्यकव्य
व्याहनाय ॥ ४ ॥ वजा ४ हव्य ४ हो ४ समयस्त्व वज तेज अश ४ समयान्नि वि
लाये ॥ डं वज न इ प्रीक्ष न प्रिति रु स्वा हो ॥ अं वज न लाये ॥ यव गव्य ॥
डं अग्नीय प्रवज स स्तोत्राय या धं अग्नीय अश्वमने प्रितिय रु स्वा
हो ॥ प्रीक्ष न ॥ स्नान ॥ ला ॥ धी ॥ मुनि ॥ ला ॥ ध्या ॥ मं ॥ अग्नीय न ॥ धन को
चकी ॥ डं वज सत्वा अश ॥ मं ॥ न वज ॥ डं सर्वपाप दहन वज

यु सर्वपाप दह स्वाहा ॥ अम नुन स्वचक ॥ स्वस्वमने न हव्य अ
धि क्षानयाया ॥ जो यय को ॥ न तो अग्नि मूर्ध्वी न को न न च वज यव
॥ मूल प्रमाने विहावे ॥ डं अश्वमने प्रितिय रु स्वा हो ॥ धी ॥ न
पवि फ ३ हया ली ॥ स सिध पत्रिया त्या इ रु या न ॥ धे ॥ स य ३ अग्नि
अग्नि अग्नि यं द्रय इ ॥ डं अग्नीय स्वाहा ॥ धे ॥ न ॥ डं अग्नीय स्वाहा
अग्नीय ॥ डं वज सी माय स्वाहा ॥ य ३ ॥ स सि ॥ डं वज गम नाय स्वा
हा ॥ रव ३ ॥ न सि ॥ डं वज वृ ३ ॥ य स्वाहा ॥ अग्नीय मार्ग न डं वज कृ ३

नाय स्वाहा ॥ व ० सि ॥ डें वज्र यहाय स्वाहा ॥ इति त्रिसि ॥ डें वज्र जनि
नाय स्वाहा ॥ भनिक ० सि ॥ डें वाधिवृदाय स्वाहा ॥ ॐ वज्र गति
डें वज्र ने नाय न नाय स्वाहा ॥ पिनाय सि ॥ डें वृक्ष विनाय स्वाहा ॥ वृक्ष
नर सि ॥ डें मधुन स्वाहा ॥ मधुन सि ॥ डें अज्ञ काय स्वाहा ॥ अज्ञ
सि ॥ डें सर्व पाय प्रसमनाय स्वाहा ॥ सर्व काय सि ॥ डें वज्र सह को
नाय स्वाहा ॥ ॐ वति ॥ डें सर्व क सुप्रसमनाय स्वाहा ॥ क देव गीता
त्रिनी ॥ डें अज्ञाने ह न वजाय स्वाहा ॥ क जानी ॥ डें वजाय स्वाहा
हा ॥ इति ॥ डें सर्व पाय न ह न वजाय म ध्याय न क जानी

हा ॥ डें वज्र पूरे स्वाहा ॥ अज्ञान ॥ डें वज्र वेगाय स्वाहा ॥ न क
डें वज्र द्युमनाय स्वाहा ॥ ॐ ॥ डें वज्र विज्ञाय स्वाहा ॥ ॐ वज्र गी
डें वज्र महावनाय स्वाहा ॥ माता ॥ स्वाहा ॥ क र गीता स्वाहा ॥ डें वज्र
ध्याय स्वाहा ॥ ॐ कायुको ॥ डें अज्ञ सर्व संपत्ति स्वाहा ॥ अज्ञान ध
विज्ञा ॥ डें अज्ञ दत्तनराय स्वाहा ॥ कोर स अदि प ॥ डें वज्र
नाय स्वाहा ॥ न व ॥ अज्ञान ही न व ॥ पला ॥ ध्याय स्वाहा ॥
न ध्याय ॥ ॥ अज्ञान पातन ॥ अज्ञान ध्याय स्वाहा ॥ डें वज्र सुख
अज्ञान ॥ ॐ नित न न ॥ प्रिप्रदक्षिनी ॥ अज्ञान ध्याय स्वाहा ॥

ततः॥ सुसिवाब्दः॥ अनादिति चन्द्रावादनः॥ तति॥ नृजनसर्वसि
द्धि स हो द्वैतं वक्ष्यन्त माहं ये दमवसिद्धि प्रदायकः॥ सन्तु गत्यन्त
ततो अन्तर्गतं यत्नं न ह्यस्य॥ इत्युक्तं तत्रैवं॥ प्रोक्तं भवत्वा॥ वक्ष्ये
ग्रासमनादि जै कृत्वा लोको रुत हाना मि विहाय॥ काया काया
ज्ञो यद्वाग्म ददिक मल वं प्राप्तेनोपति मनु नाति पति स्व स्व
विज्ञानिष्यन्ति॥ इति उक्तं त्रि म्भ सैन स म्भु या॥ धूप स म्भु
मुलये विहाय॥ ततो द्विजम उर धा नम स स्वै च वै ज्ञा र्क म्भ

दिहिरानियधूतमोदुहास्नानमल्लसपमल्लयाक्षीमनीलमि
 वसमल्लसाहतीविलास॥ दवसकेस्वानतसीश्राकषेक्ष॥
 धूपमैनु॥ हगवल्लीअमूकसगलादि॥ अयमेसरुर्गम
 निग्राऊलोहामीनहास्नानपुत्रायाचय्यन्यासलोधो
 तुतिःपतर्यन॥ नगोदवतायामूपलकालेनशुद्धवदय
 प्रमानेविलास॥ उश्रावपनलादि॥ पूर्वमगुपत्रिया
 लमैनुनइरुयातू॥ घृतअर्कदिमीनकुलेपयकच